की समस्याओं का भी घर बैठे समाधान होता रहा। जिन बच्चों के पास महंगे स्मार्ट फोन नहीं थे, वे भी घरों में ऑनलाइन शिक्षण से वंचित नहीं रह पाए, यह बड़ी बात रही।

'स्वयंप्रभा' चैनल ने बच्चों को निःशुल्क सुविधा देने में मदद की। यह ऐसा चैनल है, जिसका कोई शुल्क नहीं देना होता है। यह 32 डीटीएच चैनलों का एक ग्रुप है, जो कला, विज्ञान, वाणिज्य, सामाजिक विज्ञान, इंजीनियरिंग, सूचना तकनीक, कानून, चिकित्सा, कृषि आदि विषयों का पाठ्यक्रम मुहैया कराता है और इन विषयों को कवर करता है। हर दिन चौबीसों घंटे इस चैनल में उच्च शैक्षणिक कार्यक्रम प्रसारित होते हैं।

केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने एक ही माध्यम से अनेक भाषाओं में बच्चों को विभिन्न विषयों की शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराने के उद्देश्य से एक ऐप और पोर्टल बनाया। इसका नाम रखा गया - 'दीक्षा' (डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग)। इसने बच्चों को बेहतरीन कंटेंट उपलब्ध करवाया। दीक्षा ऐप ई-बुक और ई-कंटेंट का एक भंडार है, जिसमें एनसीईआरटी और संबंधित पाठ्यक्रम का ई-कंटेंट, ई-टेक्स्ट बुक क्यूआर कोड के साथ मैप की होती है। इसमें 15 भाषाओं में पाठ्य सामग्री उपलब्ध होती है। इस ऐप के माध्यम से 'वन नेशन वन डिजिटल प्लेटफॉर्म' की संकल्पना को साकार करने का प्रयास किया गया है। इसमें कक्षा 1 से 12 तक के बच्चों की पाठ्य सामग्री उपलब्ध है। इस ऐप के इस्तेमाल करने की संख्या बताती है कि बच्चों को लॉकडाउन में इसकी बहुत आवश्यकता रही। 22 मार्च से अप्रैल, 2020 तक इस ऐप और उसके कंटेंट को डाउनलोड करने में आठ गुना वृद्धि दर्ज की गई थी।

केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय की वेबसाइट, पोर्टल और ऐप ई-पाठशाला ने भी बच्चों को घर बैठे ज्ञान अर्जित करने में बड़ी भूमिका निभाई है। इस ऐप के माध्यम से एनसीईआरटी की किताबों को निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। पीडीएफ फॉर्मेट में सभी विषयों की कक्षा एक से कक्षा 12 तक की किताबों को डाउनलोड किया जा सकता है। इसी प्रकार पीएम ई-विद्या कार्यक्रम भी ऑनलाइन और डिजिटल एजुकेशन के लिए बहुत लाभकारी साबित हो रहा है। यह कार्यक्रम देश के 100 टॉप विश्वविद्यालयों और स्कूलों के लिए आरंभ किया गया है। इसके तहत 30 मई, 2020 से ऑनलाइन एजुकेशन कोर्स शुरू करने की अनुमति दी गई है।

'मनोदर्पण' कार्यक्रम ने की स्वास्थ्य की रक्षा

कोविड-19 के भय और लॉकडाउन से लोग परेशान रहे। अनेक लोगों को निराशा और अवसाद ने घेर लिया। स्कूल मैदान, पार्क और गली-मुहल्लों में उछल-कूद करने वाले बच्चे चहारदीवारियों में कैद होने को मजबूर हो गए। घर बैठे-बैठे अभिभावकों के अनेक दिशा-निर्देश, पढ़ाई का दबाव, घर में बना भोजन ही खाना, भविष्य की चिंताएं अनेक कारणों से बच्चे परेशान रहने लगे। इसका दुष्प्रभाव उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर दिखाई देने लगा। बच्चों की परेशानी को देख माता-पिता का भी परेशान होना स्वाभाविक था, किंतु केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के 'मनोदर्पण' कार्यक्रम ने ऐसे बच्चों, अभिभावकों और शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा करने में बड़ी भूमिका निभाई। पिछले साल वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान के तहत 17 मई, 2020 को 'मनोदर्पण' कार्यक्रम शुरू करने की घोषणा की थी। इसके तहत एक वेबसाइट शुरू की गई। इस पर मानसिक समस्याओं से परेशान छात्र-छात्राएं, अभिभावक और शिक्षक सुबह आठ से शाम आठ बजे तक अपनी दिक्कतें बता सकते हैं। करीब 500 मनोचिकित्सक और विशेषज्ञ इन 12 घंटों की अवधि में समस्याओं के समाधान को तत्पर रहते हैं। इस प्रकार बच्चों, माता-पिताओं और शिक्षकों को घर बैठे ही समस्याओं से निजात मिल जाती है। इसके लिए एक टोल फ्री नंबर-8448440632 भी जारी किया गया। इस कार्यक्रम के तहत एक इंटरेक्टिव ऑनलाइन चैट प्लेटफॉर्म भी शुरू किया गया है। देखा गया कि इस दौरान छात्रों में कुल आठ प्रकार के तनाव रहे हैं। जैसे- महामारी का डर, लॉकडाउन, परीक्षा परिणाम की चिंता, भविष्य को लेकर अनिश्चितता, खेल-कूद से दूर रहना इत्यादि। इन तनावों से ग्रस्त छात्र की समस्या दूर नहीं की जाती तो इसके भयंकर परिणाम हो सकते थे।

शिक्षकों, विद्यार्थियों और अभिभावकों से केंद्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के सीधे संवाद ने भी बच्चों और अभिभावकों को निराश नहीं होने दिया। डॉ. निशंक ने बच्चों के सुझाव ही नहीं लिये, उनकी समस्याओं का समाधान भी किया।

वैसे भी कोरोना जैसी विकट परिस्थिति में जब हर व्यक्ति अपने जीवन और भविष्य को लेकर बेहद चिंतित रहा, उस संकटकाल में इस कार्यक्रम ने अनेक लोगों को अवसाद, निराशा, तनाव, नकारात्मकता, अधीरता जैसे मनोरोगों से ग्रसित होने से बचाया है। वहीं, कोरोना काल में जेईई, नीट और नेट जैसी प्रतियोगी परीक्षाएं करवाना कम कठिन नहीं था, लेकिन केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के कुशल निर्देशन और मार्गदर्शन में टेस्टिंग एजेंसी तथा राज्य एवं केंद्रशासित राज्यों की सरकारों एवं प्रशासन ने इन परीक्षाओं को निर्बाध और निर्विघ्न संपन्न कराया। कोरोना काल में बच्चों की पढ़ाई होने तथा प्रतियोगी परीक्षाएं होने से उनका एक वर्ष खराब होने से बच गया।

शिक्षकों, विद्यार्थियों और अभिभावकों से केंद्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के सीधे संवाद ने भी बच्चों और अभिभावकों को निराश नहीं होने दिया। डॉ. निशंक ने बच्चों के सुझाव ही नहीं लिये, उनकी समस्याओं का समाधान भी किया। किसी केंद्रीय मंत्री की अभी तक की यह खास पहल रही। उन्होंने स्कूल खोले जाने पर भयभीत बच्चों को स्कूल जाने को प्रोत्साहित किया और बच्चों तथा अभिभावकों के मन में बैठे असुरक्षा के डर को समाप्त करने का प्रयास किया।

तकनीक व बौद्धिक संपदा का किया बेहतरीन इस्तेमाल : निशंक

केंद्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल का कहना है कि कोविड-19 का एक वर्ष का यह संकट पूरी दुनिया को दहला गया। भारत ने सचेत करते हुए समय पर स्वयं को संभाल लिया था। हमने कम समय में सूझ-बूझ वाले निर्णय लिये और अपनी बौद्धिक संपदा, तकनीक एवं संसाधनों का सही इस्तेमाल कर इस विकट समय पर विजय प्राप्त कर गए। शिक्षा के क्षेत्र में हमने जो किया, उसकी प्रशंसा पूरे विश्व में हुई। हमने शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित नहीं होने दिया। जितना कर सकते थे, किया। बच्चों के स्वास्थ्य की भी रक्षा की और भविष्य तथा समय की भी। संयम, धैर्य, समन्वय और मंथन हमारी सफलता के सूत्र रहे। ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा का सही इस्तेमाल कर हमने बच्चों और उनके अभिभावकों में उम्मीद और उत्साह की लौ जलाए रखी। हमारे लाखों शिक्षक, नॉनटीचिंग कार्मिक, विशेषज्ञ, तकनीशियन और विद्वान दिन-रात एक कर सरस्वती मां के इस पुनीत यज्ञ में आहुतियां देते रहे। बच्चे मानसिक रोगों के शिकार न हों, इसके लिए भी 'मनोदर्पण' जैसा कार्यक्रम चलाया गया। किसी तरह अंतिम वर्ष वालों की परीक्षाएं भी कराईं, ताकि उनकी डिग्रियों पर कोविड-19 की काली छाया न पड़े और इसका प्रतिकूल प्रभाव उनके भविष्य पर न पड़े। जेईई, नीट और नेट जैसी इंजीनियरिंग, चिकित्सा तथा प्राध्यापकीय प्रतियोगी परीक्षाएं भी चौकन्ना होकर संपन्न कराई गईं। बच्चों, उनके माता-पिता की समस्याओं पर गंभीरता से मंथन कर उन पर उपयुक्त निर्णय लिये। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का मार्गदर्शन मेरे कार्य के लिए ऊर्जा साबित हुआ। मुझे अपार खुशी है कि मेरे देश के बच्चे इस विकट संकट को पार गए। मेरे देश ने एक बार फिर दिखा दिया कि हम हर समस्या का डटकर मुकाबला करने में सक्षम हैं।